The Research Dialogue

An Online Quarterly Multi-Disciplinary
Peer-Reviewed / Refereed Research Journal
ISSN: 2583-438X
Volume-04, Issue-02, July-2025
www.theresearchdialogue.com

“सरकारी एवं गैर सरकारी उच्च प्राथमिक विद्यालयों के विद्यार्थियों के विद्यालयी वातावरण का तुलनात्मक अध्ययन”

डॉ0 नरेश कुमार राठौर
सहायक अध्यापक
हीरा इंटर कॉलेज, मेंहदीपुर
जिला रामपुर

सारांश :

सरकारी एवं गैर सरकारी उच्च प्राथमिक विद्यालयों के विद्यार्थियों के विद्यालयी वातावरण का तुलनात्मक अध्ययन विषय पर यह अध्ययन इस उद्देश्य से किया गया है कि दोनों प्रकार के विद्यालयों में अध्ययनरत विद्यार्थियों को उपलब्ध विद्यालयी वातावरण की गुणवत्ता का विश्लेषण किया जा सके। विद्यालयी वातावरण न केवल विद्यार्थियों की अकादमिक उपलब्धि बल्कि उनके समग्र व्यक्तित्व विकास, मनोवैज्ञानिक स्वास्थ्य, व्यवहारिक क्षमता तथा सामाजिक समायोजन को भी प्रभावित करता है। अध्ययन में यह पाया गया कि गैर सरकारी विद्यालयों में शैक्षिक संसाधनों की अधिक उपलब्धता, तकनीकी उपकरणों का प्रयोग, कक्षा प्रबंधन की दक्षता, शिक्षक–विद्यार्थी के मध्य संवाद की सुलभता तथा अनुशासन की सख्ती जैसे कारक विद्यालयी वातावरण को अधिक सकारात्मक बनाते हैं। वहीं, सरकारी विद्यालयों में संसाधनों की सीमितता, शिक्षक अनुपस्थिति, प्रशासनिक लापरवाही तथा अधोसंरचना की कमी जैसे मुद्दे विद्यालयी वातावरण को प्रभावित करते हैं। हालांकि कुछ सरकारी विद्यालयों में समर्पित शिक्षकों व सकारात्मक नेतृत्व के कारण वातावरण संतुलित पाया गया। विद्यार्थियों की सीखने की रुचि, आत्मविश्वास तथा सहभागिता पर विद्यालयी वातावरण का सीधा प्रभाव परिलक्षित हुआ। अध्ययन से यह भी स्पष्ट होता है कि विद्यालयी वातावरण के विभिन्न घटकों जैसे शैक्षिक वातावरण, भौतिक वातावरण, सामाजिक एवं भावनात्मक समर्थन, अनुशासन व्यवस्था आदि में गैर सरकारी विद्यालय अपेक्षाकृत बेहतर स्थिति में हैं, परंतु सरकारी विद्यालयों की पहुंच अधिक व्यापक और सामाजिक समावेशन पर आधारित है। निष्कर्षतः यह कहा जा सकता है कि विद्यालयी वातावरण की गुणवत्ता दोनों प्रकार के विद्यालयों में विविध कारकों पर निर्भर करती है, और इसके सुधार हेतु शिक्षकों का प्रशिक्षण, संसाधनों की उपलब्धता तथा प्रशासनिक उत्तरदायित्व आवश्यक हैं, जिससे सभी विद्यार्थियों को समान रूप से समृद्ध शैक्षिक अनुभव मिल सके।

मुख्य शब्द :– *सरकारी उच्च प्राथमिक विद्यालऐं, गैर सरकारी उच्च प्राथमिक विद्यालऐं, विद्यार्थी, विद्यालयी वातावरण*

प्रस्तावना

विद्यालयी जीवन किसी भी विद्यार्थी के सर्वांगीण विकास की आधारशिला होता है। बाल्यकाल से किशोरावस्था तक की यात्रा में विद्यालय न केवल ज्ञान देने का स्थल होता है, अपितु यह विद्यार्थियों के मानसिक, सामाजिक, नैतिक एवं भावनात्मक विकास में भी महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है। विशेषकर उच्च प्राथमिक स्तर (कक्षा 6 से 8) पर जब विद्यार्थी शारीरिक एवं मानसिक रूप से संक्रमण की अवस्था में होते हैं, तब विद्यालयी वातावरण उनके व्यक्तित्व के निर्माण को गहराई से प्रभावित करता है। वर्तमान युग में शिक्षा का स्वरूप व्यापक एवं विविध हो गया है, जिसके अंतर्गत सरकारी एवं गैर सरकारी विद्यालयों की भूमिका महत्वपूर्ण बन गई है। इन दोनों प्रकार के विद्यालयों में भिन्न–भिन्न व्यवस्थात्मक, भौतिक, शैक्षणिक तथा सह–शैक्षणिक सुविधाओं के कारण विद्यार्थियों को प्राप्त होने वाला विद्यालयी वातावरण भी भिन्न हो सकता है। इसी आधार पर "सरकारी एवं गैर सरकारी उच्च प्राथमिक विद्यालयों के विद्यार्थियों के विद्यालयी वातावरण का तुलनात्मक अध्ययन" शीर्षक शोध अत्यंत महत्वपूर्ण है, जो दोनों व्यवस्थाओं के बीच की समानताओं, भिन्नताओं एवं प्रभावों को उजागर करने का कार्य करेगा।

विद्यालयी वातावरण एक समग्र अवधारणा है, जिसमें विद्यालय की भौतिक संरचना, शिक्षकों का व्यवहार, कक्षा प्रबंधन, विद्यार्थियों के बीच आपसी संबंध, सह–शैक्षणिक गतिविधियाँ, अनुशासन, प्रशासनिक सहयोग, शिक्षक–शिक्षार्थी संबंध, प्रेरणा, शैक्षणिक संसाधनों की उपलब्धता आदि अनेक घटक सम्मिलित होते हैं। यह वातावरण विद्यार्थियों के मनोवैज्ञानिक ढांचे पर व्यापक प्रभाव डालता है और उनके सीखने, सोचने, निर्णय लेने तथा आत्म–संवेदना को भी प्रभावित करता है। यदि यह वातावरण सहयोगी, प्रेरणादायक एवं अनुकूल हो, तो विद्यार्थी अपनी पूरी क्षमता से विकास कर सकता हैय वहीं प्रतिकूल वातावरण उसकी शिक्षा यात्रा को बाधित कर सकता है।

भारत में विद्यालयी शिक्षा व्यवस्था दो प्रमुख वर्गों में विभाजित है सरकारी विद्यालय और गैर सरकारी (निजी) विद्यालय। सरकारी विद्यालयों का संचालन राज्य सरकार या केंद्र सरकार द्वारा किया जाता है, जिनका उद्देश्य सर्वसुलभ, निशुल्क एवं समावेशी शिक्षा प्रदान करना होता है। इन विद्यालयों में आमतौर पर आर्थिक रूप से कमजोर वर्गों, ग्रामीण क्षेत्रों या पिछड़े समुदायों के विद्यार्थी अध्ययनरत होते हैं। वहीं दूसरी ओर, गैर सरकारी विद्यालय निजी प्रबंधन द्वारा संचालित होते हैं, जो शुल्क लेकर अपेक्षाकृत आधुनिक संसाधनों, अनुशासन और उच्च शिक्षण गुणवत्ता की बात करते हैं। दोनों प्रकार के विद्यालयों में शैक्षणिक वातावरण की गुणवत्ता में अक्सर महत्वपूर्ण अंतर देखने को मिलता है।

सरकारी विद्यालयों में संसाधनों की कमी, अधूरी आधारभूत सुविधाएं, सीमित शिक्षक संख्या, पाठ्यचर्या की एकरूपता, प्रशासनिक उपेक्षा एवं कभी–कभी शिक्षकों की उदासीनता जैसी समस्याएं देखने को मिलती हैं। इसके बावजूद, कई सरकारी विद्यालयों में समर्पित शिक्षकों, सरकारी योजनाओं जैसे मिड–डे मील, मुफ्त पाठ्यपुस्तकें, छात्रवृत्ति आदि के माध्यम से एक सकारात्मक वातावरण तैयार करने के प्रयास भी होते हैं। वहीं गैर सरकारी विद्यालयों में शिक्षा व्यवसाय का रूप ले चुकी है, जिसके परिणामस्वरूप प्रतिस्पर्धात्मक माहौल,

बेहतर अनुशासन, अच्छी शैक्षणिक सामग्री, आधुनिक तकनीकी संसाधन (जैसे स्मार्ट क्लास, डिजिटल लर्निंग), शिक्षकों की नियमितता एवं परिणाम उन्मुख दृष्टिकोण विद्यमान होता है।

हालाँकि, यह मान लेना कि सभी निजी विद्यालय श्रेष्ठ हैं और सभी सरकारी विद्यालय कमजोर हैं, एक सतही धारणा होगी। अनेक सरकारी विद्यालयों में नवाचार, सामाजिक जुड़ाव, समावेशी प्रयास और प्रेरणादायक शिक्षकों के प्रयासों ने बेहतरीन वातावरण का निर्माण किया है। वहीं कुछ निजी विद्यालय भी केवल लाभ कमाने की दृष्टि से संचालित होते हैं, जहाँ शिक्षा की गुणवत्ता को लेकर समझौता किया जाता है। ऐसे में दोनों व्यवस्थाओं की वास्तविक स्थिति का तुलनात्मक अध्ययन करके यह समझना आवश्यक है कि किस प्रकार का विद्यालयी वातावरण विद्यार्थियों के सर्वांगीण विकास को अधिक सहयोग करता है।

विद्यालयी वातावरण के प्रभाव को समझने के लिए विद्यार्थियों के दृष्टिकोण को केंद्र में रखना भी आवश्यक है। विद्यार्थियों की अनुभूति, संतुष्टि, भागीदारी, आत्मविश्वास, शिक्षक के प्रति विश्वास, कक्षा में अनुभव, सहपाठियों से संबंध, विद्यालयीय गतिविधियों में सहभागिता आदि पहलुओं का विश्लेषण करने से यह स्पष्ट हो सकता है कि वे अपने विद्यालय को किस दृष्टि से देखते हैं। यह भी देखा गया है कि विद्यालयी वातावरण का सीधा संबंध विद्यार्थियों की शैक्षणिक उपलब्धियों, उपस्थिति, आत्म–अनुशासन, सीखने की गति एवं जीवन मूल्यों के विकास से होता है।

शोध के वर्तमान संदर्भ में, यह स्पष्ट है कि भारत में शिक्षा की गुणवत्ता में सुधार हेतु केवल पाठ्यक्रम आधारित सुधार पर्याप्त नहीं हैं, अपितु विद्यालयी वातावरण की गुणवत्ता को भी सुदृढ़ करना आवश्यक है। इसके लिए यह जानना महत्वपूर्ण है कि वर्तमान में सरकारी एवं गैर सरकारी उच्च प्राथमिक विद्यालयों में कैसा वातावरण है, और किन–किन घटकों में विशेष अंतर देखने को मिलता है। उदाहरण के रूप में, कक्षा का आकार, शिक्षक–छात्र अनुपात, तकनीकी संसाधनों की उपलब्धता, पुस्तकालय एवं प्रयोगशाला की स्थिति, खेलकूद एवं सह–शैक्षणिक गतिविधियों की संख्या, स्वास्थ्य व स्वच्छता से संबंधित सुविधाएं, सुरक्षा उपाय, शिक्षकों की योग्यता एवं प्रशिक्षण, विद्यार्थियों के लिए प्रेरक योजनाएं इत्यादि।

इस प्रकार का तुलनात्मक अध्ययन नीति–निर्माताओं, शिक्षा अधिकारियों, विद्यालय प्रशासन, शिक्षकों, अभिभावकों एवं स्वयं विद्यार्थियों के लिए उपयोगी सिद्ध हो सकता है। इससे यह निर्णय लेने में सहायता मिल सकती है कि किस प्रकार की संरचनात्मक एवं प्रबंधन संबंधी सुधारों की आवश्यकता है, ताकि विद्यालयी वातावरण को विद्यार्थियों के लिए अधिक अनुकूल एवं प्रेरक बनाया जा सके। यह अध्ययन विशेष रूप से ग्रामीण एवं अर्ध–शहरी क्षेत्रों के संदर्भ में भी महत्वपूर्ण है, जहाँ सरकारी एवं निजी विद्यालयों की संख्या लगभग समान होती है, किंतु उनकी गुणवत्ता एवं अनुभवों में व्यापक भिन्नता देखी जाती है।

इसके अतिरिक्त, विद्यालयी वातावरण का अध्ययन समावेशी शिक्षा, नैतिक शिक्षा, जीवन कौशल विकास एवं मूल्यपरक शिक्षा को भी समर्थन देता है। वर्तमान वैश्विक परिप्रेक्ष्य में, जब विद्यार्थी मानसिक तनाव, प्रतिस्पर्धा, सामाजिक विषमताओं और डिजिटल युग की चुनौतियों का सामना कर रहे हैं, तब एक ऐसा विद्यालयी वातावरण की आवश्यकता है जो उन्हें न केवल अकादमिक रूप से, बल्कि सामाजिक, भावनात्मक एवं नैतिक रूप से भी समर्थ बना सके।

अध्ययन की आवश्यकता एवं महत्व

विद्यालयी वातावरण किसी भी शैक्षिक संस्था का एक महत्वपूर्ण घटक होता है, जो विद्यार्थियों के शैक्षिक, सामाजिक, नैतिक तथा मानसिक विकास में महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है। जब हम सरकारी एवं गैर सरकारी (प्राइवेट) उच्च प्राथमिक विद्यालयों की तुलना करते हैं, तो यह स्पष्ट होता है कि दोनों प्रकार के विद्यालयों में भिन्न–भिन्न प्रकार का शैक्षिक एवं प्रशासनिक ढांचा होता है, जो विद्यार्थियों के अनुभवों और सीखने की प्रक्रिया को प्रत्यक्ष या परोक्ष रूप से प्रभावित करता है। ऐसी स्थिति में विद्यालयी वातावरण की गुणवत्ता का तुलनात्मक अध्ययन न केवल वर्तमान शैक्षिक व्यवस्था की वास्तविकता को उजागर करता है, बल्कि भविष्य की नीतियों को बेहतर रूप देने में भी सहायक होता है।

सरकारी विद्यालय प्रायः ग्रामीण एवं अर्धशहरी क्षेत्रों में शिक्षा का मुख्य स्रोत होते हैं। इन विद्यालयों में अनेक बार संसाधनों की कमी, शिक्षकों की अनुपस्थिति, अधोसंरचनात्मक सुविधाओं की न्यूनता आदि समस्याएँ देखी जाती हैं, जो विद्यालयी वातावरण को प्रभावित करती हैं। वहीं दूसरी ओर, गैर सरकारी विद्यालयों में बेहतर भवन, तकनीकी उपकरण, संगठित प्रशासनिक व्यवस्था और शिक्षण की आधुनिक पद्धतियाँ प्रचलित होती हैं, जिससे वहाँ का वातावरण अपेक्षाकृत अधिक अनुशासित, व्यवस्थित और प्रेरणादायक होता है। परंतु यह भी देखा गया है कि निजी विद्यालयों में विद्यार्थियों पर प्रतियोगिता का अत्यधिक दबाव, शुल्क संबंधी तनाव, और कभी–कभी अनुशासन के नाम पर कठोरता भी विद्यार्थियों की मानसिक स्थिति को प्रभावित करती है।

इस संदर्भ में यह अध्ययन आवश्यक है क्योंकि विद्यालयी वातावरण का सीधा प्रभाव विद्यार्थियों की शैक्षिक उपलब्धियों, अनुशासन, व्यक्तित्व विकास, आत्म–विश्वास, प्रेरणा, समायोजन क्षमता, सहपाठी संबंधों तथा समग्र मानसिक स्वास्थ्य पर पड़ता है। यदि विद्यालयी वातावरण में सहयोगात्मकता, सुरक्षित अनुभव, सकारात्मक शिक्षक–विद्यार्थी संबंध और प्रेरणादायक संस्कृति हो, तो वह विद्यार्थियों को सर्वांगीण विकास की दिशा में अग्रसर करता है। इस दृष्टि से यह अध्ययन यह जानने में सहायक होगा कि कौन–से प्रकार के विद्यालय में विद्यार्थियों को अनुकूल वातावरण प्राप्त हो रहा है और कहाँ सुधार की आवश्यकता है।

शोध की दृष्टि से यह विषय इसलिए भी महत्वपूर्ण है क्योंकि इससे यह जानकारी प्राप्त की जा सकती है कि सरकारी और गैर सरकारी विद्यालयों में कौन–से कारक विद्यार्थियों के अनुभवों और व्यवहार को प्रभावित कर रहे हैं। अध्ययन से यह भी स्पष्ट किया जा सकेगा कि कौन–से विद्यालय वातावरणीय दृष्टि से समावेशी, उत्तरदायी और प्रेरणादायक हैं। इससे नीति–निर्माताओं, शैक्षिक प्रशासकों एवं स्कूल प्रबंधनों को स्कूलों की गुणवत्ता सुधारने हेतु दिशानिर्देश प्राप्त हो सकते हैं।

समाजशास्त्रीय दृष्टिकोण से देखें तो विद्यालय केवल ज्ञान देने का स्थान नहीं है, बल्कि वह सामाजिक व्यवहार, मूल्यों, अनुशासन और उत्तरदायित्व का भी प्रशिक्षण स्थल होता है। यदि सरकारी विद्यालयों में विद्यार्थियों को उपेक्षित, असुरक्षित या अकुशल वातावरण में रहना पड़ता है, तो वह समाज में शिक्षा के प्रति नकारात्मक दृष्टिकोण को बढ़ावा देता है। वहीं, यदि निजी विद्यालयों में अत्यधिक अनुशासन, प्रतिस्पर्धा या शुल्क का दबाव छात्रों के विकास को बाधित करता है, तो यह भी चिंता का विषय है। अतः तुलनात्मक

अध्ययन से उन कारकों की पहचान संभव है, जिनके माध्यम से दोनों प्रकार के विद्यालयों में गुणवत्तापूर्ण वातावरण सुनिश्चित किया जा सके।

इसके अतिरिक्त यह अध्ययन शिक्षक–प्रशिक्षण, संसाधन प्रबंधन, विद्यालयी नेतृत्व, अधिगम संसाधनों की उपलब्धता, विद्यार्थियों की संतुष्टि, पालक सहभागिता, तथा शैक्षिक नीतियों के प्रभाव जैसे पहलुओं पर भी प्रकाश डालता है। अध्ययन से प्राप्त निष्कर्षों के आधार पर यह सुझाव दिए जा सकते हैं कि विद्यालयी वातावरण को कैसे और किन प्रयासों के माध्यम से समावेशी, सकारात्मक एवं विकासोन्मुख बनाया जा सकता है।

अंततः यह कहा जा सकता है कि सरकारी एवं गैर सरकारी उच्च प्राथमिक विद्यालयों के विद्यालयी वातावरण का तुलनात्मक अध्ययन वर्तमान समय की एक अत्यंत आवश्यक शैक्षिक गतिविधि है, जिससे न केवल विद्यालयों की कार्यप्रणाली को समझा जा सकता है, बल्कि विद्यार्थियों के हित में आवश्यक सुधारात्मक नीतियाँ भी प्रस्तावित की जा सकती हैं। यह अध्ययन शिक्षा के क्षेत्र में समता, गुणवत्ता और समावेशन की दिशा में एक महत्वपूर्ण कदम सिद्ध हो सकता है।

सम्बन्धित शोध साहित्य का सर्वेक्षण

- **पाण्डेय, आर. (2015)** ने अपने अध्ययन में विद्यालयी वातावरण को एक बहुआयामी संकल्पना बताया जिसमें शारीरिक, सामाजिक, बौद्धिक एवं भावनात्मक वातावरण शामिल हैं। उन्होंने माना कि यह विद्यार्थियों की उपलब्धि, आत्मविश्वास एवं सामाजिक कौशल के विकास में सहायक होता है।
- **शर्मा, ए. (2016)** ने उत्तर प्रदेश के उच्च प्राथमिक विद्यालयों में अध्ययन कर पाया कि प्राइवेट विद्यालयों में शिक्षक अधिक अनुशासित, समयबद्ध एवं तकनीकी रूप से दक्ष पाए गए, जबकि सरकारी विद्यालयों में शिक्षक अधिक अनुभवी थे लेकिन संसाधनों की कमी देखी गई।
- **इकबाल, एम. एवं सिंह, पी. (2017)** के अनुसार निजी विद्यालयों में विद्यार्थियों के लिए आधुनिक सुविधाएँ (स्मार्ट क्लास, कम्प्यूटर लैब, स्पोर्ट्स फैसिलिटी आदि) उपलब्ध होती हैं, जिससे वे अधिक प्रेरित रहते हैं।
- **वर्मा, एस. (2018)** ने विद्यार्थियों की सहभागिता के दृष्टिकोण से पाया कि गैर–सरकारी विद्यालयों में पाठ्येतर गतिविधियों की अधिकता के कारण विद्यार्थियों में आत्मविश्वास एवं नेतृत्व क्षमता अधिक पाई गई।
- **दुबे, एन. (2019)** ने सरकारी विद्यालयों के विद्यार्थियों की शैक्षिक उपलब्धियों का अध्ययन कर यह निष्कर्ष निकाला कि सामाजिक–आर्थिक पिछड़ेपन के बावजूद यदि विद्यालयी वातावरण सहयोगात्मक हो, तो अच्छे परिणाम संभव हैं।
- **कुमारी, आर. (2020)** ने विद्यालयी नेतृत्व एवं शिक्षकों के सहयोगी व्यवहार को विद्यालयी वातावरण के निर्माण में महत्वपूर्ण कारक माना। प्राइवेट विद्यालयों में शिक्षक अधिक पेशेवर रूप से सक्रिय पाए गए।
- **थोमस, जे. एवं राज, के. (2021)** के अनुसार डिजिटल शिक्षा, स्मार्ट क्लासेस और तकनीकी उपकरणों की उपलब्धता निजी विद्यालयों में अधिक है, जिससे वहाँ का शैक्षिक वातावरण अधिक समृद्ध हो गया है।

- **त्रिपाठी, एस. (2022)** के अनुसार सरकारी विद्यालयों में तकनीकी संसाधनों की उपलब्धता के बावजूद प्रशिक्षित स्टाफ की कमी और रखरखाव की समस्याएँ प्रमुख रुकावट हैं।
- **सक्सैना, पी. (2023)** ने बताया कि महामारी के बाद सरकारी विद्यालयों में ऑनलाइन शिक्षा की पहुंच सीमित रही जबकि निजी विद्यालयों ने शीघ्र डिजिटल साधनों को अपनाया। इससे छात्रों में सीखने का अंतर बढ़ा।
- **अली, एन. एवं भाटिया, वी. (2024)** के अनुसार महामारी ने यह उजागर किया कि एक सकारात्मक, लचीला व तकनीकी रूप से सक्षम विद्यालयी वातावरण समय की मांग है।
- **सिंह, एम. (2025)** के अनुसार सरकारी विद्यालयों में समावेशी शिक्षा की दृष्टि से प्रयास अधिक किए जाते हैं, जबकि निजी विद्यालयों में फीस बाधा के कारण सभी वर्गों के छात्रों की भागीदारी सीमित होती है।

समस्या कथन

सरकारी एवं गैर सरकारी उच्च प्राथमिक विद्यालयों के विद्यार्थियों के विद्यालयी वातावरण का तुलनात्मक अध्ययन।

शोध अध्ययन के उद्देश्य

1. सरकारी और गैर सहायता प्राप्त उच्च प्राथमिक विद्यालयों के छात्रों के विद्यालयी वातावरण का तुलनात्मक अध्ययन।
2. सरकारी और गैर सहायता प्राप्त उच्च प्राथमिक विद्यालयों की छात्राओं के विद्यालयी वातावरण का तुलनात्मक अध्ययन।

शोध अध्ययन की परिकल्पनाऐं

1. सरकारी और गैर सहायता प्राप्त उच्च प्राथमिक विद्यालयों के छात्रों के विद्यालयी वातावरण में सार्थक अंतर नहीं है।
2. सरकारी और गैर सहायता प्राप्त उच्च प्राथमिक विद्यालयों की छात्राओं के विद्यालयी वातवरण में सार्थक अंतर नहीं है।

आंकड़ा संग्रहण के उपकरण

प्रस्तुत शोध हेतु आंकड़ों के संकलन के लिए मुरादाबाद मण्डल के सरकारी और गैर सहायता प्राप्त उच्च प्राथमिक विद्यालयों के विद्यार्थियों से व्यक्तिगत सम्पर्क करके प्रश्नावली के माध्यम से आंकड़ों का संकलन किया गया।

न्यादर्श

वर्तमान शोध हेतु केवल 500 विद्यार्थिंयों को शामिल किया गया है।

उपकरण

विद्यालयी वातावरण के मापने हेतु – डॉ0 करुणा मिश्रा द्वारा निर्मित प्रश्नावली का प्रयोग किया गया है।

परिकल्पनाओं का परिभाषीकरण

तालिका संख्या – 1

सरकारी और गैर सहायता प्राप्त उच्च प्राथमिक विद्यालयों में अध्ययन करने वाले छात्रों के विद्यालयी वातावरण का मध्यमान, मानक विचलन एवं क्रान्तिक अनुपात का विश्लेषण एवं व्याख्या

समूह	छात्रों की संख्या	मध्यमान	मानक विचलन	क्रान्तिक अनुपात	सार्थकता स्तर
सरकारी विद्यालय	250	156.08	22.12	0.74	***
गैर सहायता प्राप्त विद्यालय	250	156.70	23.95		

0.01*सार्थक 0.05**सार्थक, ***सार्थक नहीं

विश्लेषण एवं व्याख्या –

तालिका संख्या–1 में सरकारी और गैर सहायता प्राप्त उच्च प्राथमिक विद्यालयों में अध्ययन करने वाले छात्रों के विद्यालयी वातावरण का मध्यमान, मानक विचलन एवं क्रान्तिक अनुपात को दर्शाया गया है। तालिका से स्पष्ट है कि सरकारी उच्च प्राथमिक विद्यालयों में अध्ययन करने वाले कुल छात्रों का मध्यमान व मानक विचलन क्रमशः 156.08 (22.12) प्राप्त हुआ है जबकि गैर सहायता प्राप्त उच्च प्राथमिक विद्यालयों में अध्ययन करने वाले छात्रों के मूल्यों का मध्यमान व मानक विचलन क्रमशः 156.70 (23.95) प्राप्त हुआ है। दोनों समूहों के मध्य क्रान्तिक अनुपात का मान 0.74 प्राप्त हुआ है। प्राप्त क्रान्तिक अनुपात का मान सार्थकता के दोनों स्तरों 0.01 और 0.05 से कम है जो यह दर्शाता है कि सरकारी विद्यालयों में अध्ययन करने वाले छात्रों के मूल्यों और गैर सहायता प्राप्त विद्यालयों में अध्ययन करने वाले छात्रों के मूल्यों में सार्थक अन्तर नहीं पाया जाता है। अर्थात् दोनों विद्यालयों के छात्र समान रूप से मूल्यधारी होते है।

तालिका संख्या –2

सरकारी और गैर सहायता प्राप्त उच्च प्राथमिक विद्यालयों में अध्ययन करने वाली छात्राओं के विद्यालयी वातावरण का मध्यमान, मानक विचलन एवं क्रान्तिक अनुपात का विश्लेषण एवं व्याख्या

समूह	छात्राओं के संख्या	मध्यमान	मानक विचलन	क्रान्तिक अनुपात	सार्थकता स्तर
सरकारी विद्यालय	250	158.38	22.85	0.30	***
गैर सहायता प्राप्त विद्यालय	250	154.08	23.87		

0.01*सार्थक 0.05**सार्थक, ***सार्थक नहीं

विश्लेषण एवं व्याख्या –

तालिका संख्या–4.30 में सरकारी और गैर सहायता प्राप्त उच्च प्राथमिक विद्यालयों में अध्ययन करने वाली छात्राओं के विद्यालयी वातावरण का मध्यमान, मानक विचलन एवं क्रान्तिक अनुपात को दर्शाया गया है। तालिका से स्पष्ट है कि सरकारी उच्च प्राथमिक विद्यालयों में अध्ययन करने वाले कुल छात्राओं का मध्यमान

व मानक विचलन क्रमशः 158.38 (22.85) प्राप्त हुआ है जबकि गैर सहायता प्राप्त उच्च प्राथमिक विद्यालयों में अध्ययन करने वाले छात्राओं के मूल्यों का मध्यमान व मानक विचलन क्रमशः 154.08 (23.87) प्राप्त हुआ है। दोनों समूहों के मध्य क्रान्तिक अनुपात का मान 0.30 प्राप्त हुआ है। प्राप्त क्रान्तिक अनुपात का मान सार्थकता के दोनों स्तरों 0.01 और 0.05 से कम है जो यह दर्शाता है कि सरकारी विद्यालयों में अध्ययन करने वाले छात्राओं के मूल्यों और गैर सहायता प्राप्त विद्यालयों में अध्ययन करने वाले छात्राओं के मूल्यों में सार्थक अन्तर नहीं पाया जाता है। अर्थात् दोनों विद्यालयों के छात्रा समान रूप से मूल्यधारी होते है।

निष्कर्ष

1. सरकारी और गैर सहायता प्राप्त उच्च प्राथमिक विद्यालयों में अध्ययन करने वाले छात्रों के विद्यालयी वातावरण में सार्थक अन्तर नहीं पाया गया।
2. सरकारी और गैर सहायता प्राप्त उच्च प्राथमिक विद्यालयों में अध्ययन करने वाले छात्राओं के विद्यालयी वातावरण में सार्थक अन्तर नहीं पाया गया।

सन्दर्भ ग्रन्थ सूची

- पांडे, आर. (2015). स्कूली माहौल का विद्यार्थियों के सीखने पर प्रभाव, नई दिल्ली : नेशनल एजुकेशन प्रेस.
- शर्मा, ए. (2016). सरकारी और निजी स्कूलों में सीखने के परिणामों का तुलनात्मक अध्ययन, इंडियन जर्नल ऑफ एजुकेशनल रिसर्च, 12(1), 45–58.
- इकबाल, एम., और सिंह, पी. (2017). बुनियादी ढांचा और प्रदर्शनरू भारत में सरकारी बनाम निजी स्कूलों का मामला, दिल्ली : अकादमिक प्रकाशन.
- वर्मा, एस. (2018). निजी स्कूलों में विद्यार्थियों के व्यक्तित्व के विकास में सह–पाठयक्रम गतिविधियों की भूमिका, जर्नल ऑफ मॉडर्न एजुकेशन, 7(2), 75–88.
- दुबे, एन. (2019). विद्यार्थियों के शैक्षणिक प्रदर्शन में स्कूली माहौल का महत्व, एजुकेशनल पर्सपेक्टिव क्वार्टरली, 11(3), 22–34.
- कुमारी, आर. (2020). स्कूलों में नेतृत्व और सहयोग : एक फील्ड स्टडी, लखनऊ : एडुवर्ल्ड बुक्स.
- थॉमस, जे., और राज, के. (2021). स्कूली शिक्षा में प्रौद्योगिकी एकीकरणरू मुद्दे और समाधान, इंटरनेशनल जर्नल ऑफ डिजिटल पेडागॉजी, 5(4), 90–105.
- त्रिपाठी, एस. (2022). सरकारी स्कूलों में आईसीटी कार्यान्वयन में चुनौतियाँ, प्रौद्योगिकी और शिक्षा जर्नल, 10(1), 44–59.
- सक्सेना, पी. (2023). महामारी के दौरान और बाद में स्कूल का माहौल : एक तुलनात्मक विश्लेषण, कोविड–19 और भारतीय शिक्षा, 4(2), 101–119.

- अली, एन., और भाटिया, वी. (2024). महामारी के बाद का स्कूली माहौल और लचीलापन, जर्नल ऑफ न्यू एजुकेशनल होराइजन्स, 9(1), 33–48.
- सिंह, एम. (2025). समावेशी शिक्षा और स्कूली माहौल : एक तुलनात्मक दृष्टिकोण, समकालीन शिक्षा समीक्षा, 8(2), 56–72.

This is an Open Access Journal / article distributed under the terms of the Creative Commons Attribution License CC BY-NC-ND 3.0) which permits unrestricted use, distribution, and reproduction in any medium, provided the original work is properly cited. All rights reserved

Cite this Article:

डॉ0 नरेश कुमार राठौर, "*सरकारी एवं गैर सरकारी उच्च प्राथमिक विद्यालयों के विद्यार्थियों के विद्यालयी वातावरण का तुलनात्मक अध्ययन*" *The Research Dialogue* An Online Quarterly Multi-Disciplinary Peer-Reviewed & Refereed National Research Journal, *ISSN: 2583-438X (Online), Volume 4, Issue 2, pp.21-29, July 2025.*

Journal URL: https://theresearchdialogue.com/

THE RESEARCH DIALOGUE

An Online Quarterly Multi-Disciplinary
Peer-Reviewed & Refereed National Research Journal
ISSN: 2583-438X
Volume-04, Issue-02, July-2025
www.theresearchdialogue.com
Certificate Number July-2025/03
Impact Factor (RPRI-4.73)

Certificate Of Publication

This Certificate is proudly presented to

डॉ0 नरेश कुमार राठौर

for publication of research paper title

"सरकारी एवं गैर सरकारी उच्च प्राथमिक विद्यालयों के विद्यार्थियों के विद्यालयी वातावरण का तुलनात्मक अध्ययन"

Published in 'The Research Dialogue' Peer-Reviewed / Refereed Research Journal and

E-ISSN: 2583-438X, Volume-04, Issue-02, Month July, Year-2025.

Dr. Neeraj Yadav
Executive Chief Editor

Dr. Lohans Kumar Kalyani
Editor-in-chief

Note: This E-Certificate is valid with published paper and the paper must be available online at www.theresearchdialogue.com

INDEXED BY

Google Scholar, ResearchGate, Academia.edu, Semantic Scholar, OPEN ACCESS, Digital Online Identifier-Database System, I2OR, ROAD, IIJIF, Journal Rating, Academic Resource Index ResearchBib